



विमल इंदु की विशाल किरणें

विमल इंदु की विशाल किरणें,
प्रकाश तेरा बता रही हैं।
अनादि तेरी अनंत माया
जगत को लीला दिखा रही हैं॥



प्रसार तेरी दया का कितना
ये देखना हो तो देखे सागर।
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे
तरंगमालाएँ गा रही हैं॥

तुम्हारा स्मित हो जिसे निरखना
वो देख सकता है चंद्रिका को।
तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ
निनाद करती ही जा रही हैं॥

जो तेरी होवे दया दयानिधि,
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ।
सभी ये कहते पुकार कर के,
यही तो आशा दिला रही हैं॥

— जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद जी (सन् 1889–1937) ने 'कामायनी' जैसे विश्व विख्यात महाकाव्य की रचना की। इन्होंने अनेक ऐतिहासिक नाटकों, उपन्यासों और कहानियों की रचना भी की। चंद्रगुप्त, कंकाल, तितली आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।





शब्दार्थ

अनादि = जिसका कोई आरंभ न हो,	चंद्रिका = चाँदनी
हमेशा रहने वाला	स्मित = मंदहास, मुस्कान
अनंत = जिसका अंत न हो	प्रसार = फैलाव, विस्तार
मनोरथ = मन की कामना, अभिलाषा	निनाद = गुंजार, ध्वनि
दयानिधि = दया का भंडार, ईश्वर	तरंगमालाएँ = लहरों के समूह

1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए -

(क) ईश्वर की महिमा प्रकृति के किन-किन रूपों में दिखायी दे रही है? दिए गए उत्तरों को सही क्रम में लिखिए -

- ईश्वर का प्रकाश = चाँदनी के रूप में
- उसकी दया का प्रसार = नदियों के निनाद में
- उसकी प्रशंसा के राग = विमल इंदु की विशाल किरणों के रूप में
- ईश्वर का मंद हास = सागर की लहरों के गान में
- ईश्वर के हँसने की धुन = सागर के रूप में

(ख) परमात्मा को 'दयानिधि' क्यों कहा गया है?

(ग) तरंगमालाएँ क्या कर रही हैं ?

(घ) प्रभु की दया की तुलना सागर से क्यों की गई है ?

2. पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ (ख) तेरी प्रशंसा का राग प्यारे,
निनाद करती ही जा रही हैं। तरंगमालाएँ गा रही हैं।

3. सोच-विचार : बताइए-

(क) प्रकृति द्वारा निर्मित दस चीजों के नाम।

(ख) मानव द्वारा निर्मित बीस चीजों के नाम।

4. भाषा के रंग –

(क) नीचे लिखे शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए –

जैसे – सागर : गागर

इंदु,

धुन,

माया,

लीला,

मिला

(ख) नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए –

जैसे – इंदु : चंद्रमा

प्रकाश,

सागर,

मनोरथ,

जगत,

तरंग

5. तुम्हारी कलम से –

सुबह-शाम के दृश्यों को देखकर जो छवि आपके मन में उभरती है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

6. अब करने की बारी –

कविता का अभ्यास कर कक्षा में भाव पूर्ण ढंग से सुनाइए।

7. इस कविता को ध्यान पूर्वक पढ़िए—

पथ मेरा आलोकित कर दो।

नवल प्रात की नवल रश्मियों से मेरे उर का तम हर दो॥

मैं नन्हा सा पथिक विश्व के पथ पर चलना सीख रहा हूँ,

मैं नन्हा सा विहग विश्व के नभ में उड़ना सीख रहा हूँ।

पहुँच सकूँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक मुझको ऐसे पग दो, पर दो॥

पाया जग से जितना अब तक और अभी जितना मैं पाऊँ,

मनोकामना है यह मेरी उससे कहीं अधिक दे जाऊँ।

धरती को ही स्वर्ग बनाने का मुझको मंगलमय वर दो॥

— द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

- अब, इस कविता पर तीन प्रश्न बनाइए।
- कविता का मनवादा शीर्षक दीजिए।
- कविता पर चित्र बनाइए।

